सम्पादक की कलम से

समय

स-समान, म-ममत्व, य-यथार्थ, अर्थात, समान ममत्व(गुणात्मक मत) का यथार्थ (उत्पत्ति)।

अशोक 'मानव'

समय का पूर्ण अर्थ होता है- समान महत्व के गुणात्मक मत के मिलने से विषय का यथार्थ में बदल जाना, अर्थात विषय की उत्पत्ति होना। जिसकी वैज्ञानिक परिभाषा है उचित जलवायु (जिसमे विषय जीव पदार्थ सर्वाइव कर सके) के आने पर उत्पत्ति का होना उसका समय है। समय सदैव चलता रहता है। जब विषय जीव पदार्थ के विकास की जलवायु तैयार हो जाती है तो उसकी उत्पत्ति हो जाती है। वही उसका समय होता है। समय उस परम प्रकाश का नाम है जो अपने प्रकाश से और जल का सहयोग लेकर जलावायु तैयार करके 'जीव', 'जीव से पदार्थ' का निर्माण करके बह्मण्ड की रचना करता है। समय निरन्तर चलता रहता है। जिससे रासायनिक परिवर्तन होते रहते है जो उचित जलवायु बनाते रहते है। जिसमे जीव की उत्पत्ति होती रहती है। जिसकी गुणात्मकता से पदार्थ का निर्माण होता रहता है, जो विषय को जन्म देते रहते है, जिसके लिए निरन्तर आना जाना जारी रहता है। विषय बदलते रहते है। जिसकी पूर्ति के लिए समय जलवायु बनाता रहता है और उत्पत्ति होती रहती है। कभी न रूकने वाला यह सिलसिला सदैव समय के साथ चलता रहता है। समय का वृहद स्वरूप निरन्तर चलता रहता है। जिससे सभी पदार्थ सक्रिय होकर अपने गुण को छोड़ते रहते है। जिससे प्रकृति की रचना होती है। इसी क्रिया से उचित जलवायु का निर्माण होता है। जिसमें जीव और विषय की उत्पत्ति होती है। यह उस उत्पत्ति का समय होता है। समय ही जीव की उत्पत्ति करता है और उसका विकास करता है। जब उसका समय पूरा हो जाता है तो उसका अन्त करके उसके शरीर को पदार्थ में परिवर्तित कर देता है जो अपने गुण से जलवायु बनाने का कार्य करने लगता है। समय कभी न रूकने वाली वह धारा है जिससे पूर्ण ब्रह्मण्ड सदैव गतिमान रहता है।

प्रकृति निर्माण का समय परम प्रकाश है। जब प्रकाश जल पर पड़ता है तो जल हवा बनकर ऊपर उड़ जाता है जो जीव निर्माण के लिए तापमान बनाता है। इसके बाद जीव का निर्माण होता है, जीव से पदार्थ का निर्माण होता है। जिससे पृथ्वी बनती है, यह क्रिया प्रकाश और जल के मिलन से होती है, पर जब जीव और पदार्थ का निर्माण हो जाता है तो प्रकाश पड़ने से ये गुणात्मक ऊर्जा छोड़ते है। जिससे विषय पूर्ति की जलवायु बनती है। इसके बनने से जीव और पदार्थ का विस्तार निरन्तर होता रहता है। जीव पदार्थ प्रकाश पड़ने से अपने गुण को छोड़कर विषय पूर्ति की आवश्यकता का निर्माण करते है।जो प्रकाश के आने से बीज बनता है और जन्म लेकर अपना विषय पूरा करने लगता है यही उसका समय है। जीव और पदार्थ समय के लिए